शिकारी और हिरण

शिवपुराण से एक कहानी

एक बार एक शिकारी महाशिवरात्रि पर पूरे दिन शिकार की खोज करता रहा, जिससे अपने परिवार के लिए भोजन जुटा सके, लेकिन उसे कोई शिकार नहीं मिला। जब रात घिरने लगी तो दिनभर के भूखे-प्यासे शिकारी को एक खुली जगह मिली और उसने एक पेड़ की डाल पर आश्रय ले लिया। संयोग से वह बिल्ववृक्ष था, जिसके पत्ते पवित्र माने जाते हैं और भगवान शिव को अर्पित किए जाते हैं। संयोगवश, उस बिल्ववृक्ष के नीचे एक शिवलिंग था। शिवलिंग, भगवान शिव के निराकार अनन्त स्वरूप को दर्शाता है। जब वह शिकारी पेड़ पर विश्राम कर रहा था तो अनजाने में ही उसके पानी के पात्र से, पानी बूँद-बूँद करके शिवलिंग पर गिरने लगा और जब भी वह शिकारी हिलता तो बिल्ववृक्ष के पत्ते उस शिवलिंग पर गिरते। इस तरह, अनजाने में ही उस शिकारी ने बिल्वपत्र और जल चढ़ाकर भगवान शिव की शास्त्रोक्त रीति से पूजा की।

कुछ घण्टों पश्चात्, वहाँ से एक हिरण आ निकला। जैसे ही शिकारी ने हिरण का शिकार करने के लिए कमान पर अपना तीर चढ़ाया, उस हिरण ने शिकारी से विनती की, “हे दयालु आत्मन्, मेरा शिकार करने से पहले मुझे अपने परिवार से विदा लेने का अवसर दें। यदि आप मेरी यह एक प्रार्थना स्वीकार कर लेते हैं तो मैं निश्चित ही वापस आऊँगा तथा आपके और आपके परिवार हेतु स्वयं को भोजन के लिए प्रस्तुत कर दूँगा।” अनजाने में ही भगवान शिव की पूजा करने से शिकारी का मन अब तक शुद्ध हो चुका था। जीवन में पहली बार, उसके अन्दर करुणा का भाव जागा और उसने हिरण को जाने की अनुमति दे दी।

कुछ घण्टों के पश्चात्, एक और हिरण वहाँ आ पहुँचा। एक बार फिर शिकारी ने अपना निशाना साधा और उस हिरण ने भी दया की याचना करते हुए कुछ समय का अवकाश माँगा और कहा, “हे दयालु शिकारी, मैं समझ सकता हूँ कि इस समय आपको अपने परिवार के लिए भोजन की आवश्यकता है। कृपया, मुझे अपने परिवार से विदा लेने की अनुमति दे दें और मैं वचन देता हूँ कि मैं निश्चित वापस आऊँगा तथा आपके भोजन के लिए स्वयं को अर्पित कर दूँगा।” शिकारी का मन अब तक और भी शुद्ध हो चुका था। एक बार फिर उसने हिरण को जाने दिया। कई घण्टों बाद वहाँ एक और हिरण आया और शिकारी ने उसे भी छोड़ दिया।

रात के अन्तिम प्रहर में वे तीनों हिरण वापस आ गए। उन्होंने शिकारी को बताया कि वे सभी एक ही परिवार से हैं और वे सभी एक-साथ आए हैं, जिससे अपनी प्रतिज्ञा पूरी करते हुए वे अपने आपको भोजन के रूप में उसे अर्पित कर दें। पर भगवान शिव की आराधना और उनकी कृपा से अब तक शिकारी का हृदय पूरी तरह शुद्ध हो चुका था तथा हिरणों को मारने के विचार मात्र से ही उसका मन व्याकुल हो उठा। शिकारी ने उनसे कहा, "आप सभी महान जीव हैं जो अपने जीवन की आहुति देने के लिए तैयार हैं। कृपया मुझे क्षमा करें कि मैंने आपको मारने का प्रयास किया।"

जैसे ही शिकारी ने ये शब्द कहे, शिवलिंगम् से भगवान शिव अपने देदीप्यमान स्वरूप में प्रकट हुए और शिकारी से बोले, "मैं तुमसे बहुत प्रसन्न हूँ। तुम्हारे अन्तर में सच्ची करुणा उदित हुई है, मुझसे एक वरदान माँगो।" अब तक शिकारी का मन शिव जी की भक्ति से पूर्णरूप से रूपान्तरित हो चुका था, वह भगवान शिव के चरणों में गिर पड़ा और बोला, "मेरा मन पूर्ण रूप से आप में विलीन हो चुका है। अब मुझे और कुछ भी नहीं चाहिए।"

भगवान शिव बोले, "फिर भी, मैं तुम्हें मोक्ष प्रदान करता हूँ। तुम हमेशा इस बोध में स्थित रहोगे कि तुम और मैं एक हैं।" भगवान शिव ने आगे कहा, "तुम्हारे इन कर्मों के कारण, आज के बाद से, इस रात्रि पर की गई पूजा का फल, हज़ार गुना अधिक होगा।"

बिल्ववृक्ष पतला और सुगन्धित होता है। यह मूलतः भारत में तथा दक्षिणपूर्वी एशिया में पाया जाता है। पारम्परिक रूप से भगवान शिव की पूजा के लिए बिल्व की तीन दलों वाली पत्तियाँ उपयोग की जाती हैं। इसी कारण, बिल्ववृक्ष सामान्यतया भगवान शिव के मन्दिरों के पास पाया जाता है।

शिवपुराण से कहानी पुनःकथित ।

©२०१५ एस. वाय. डी. ए. फ़ाउन्डेशन®। सर्वाधिकार सुरक्षित।